संगीत विशारद (प्रथम खंड)

Sangeet Visharad Part-I (FourthYear)

तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) तबला एवं पखावज के विभिन्न घरानों की वादन शैली का सम्पूर्ण अध्ययन।

(२) भारतीय धन वाद्य का अध्ययन एवं संगीत में उनका योगदान।

(३) कर्नाटक ताल पद्धति का अध्ययन।

(४) भातखंडे और विष्णु दिगम्बर ताल पद्धति का विशेष अध्ययन,

उनकी त्रुटियों एवं संशोधन के सम्बन्ध में अपने विचार।

(५) भारतीय संगीत में ताल के दस प्राणों का महत्व।

(६) प्रथम से चतुर्थ वर्ष तक निर्धारित सारे तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

(७) पाठयक्रम में निर्धारित समस्त तालों के ठेके विभिन्न लयकारी में लिखनें का अभ्यास।

(८) ताल, संगत एवं लयकारी के सम्बन्ध में निबन्ध।

(९) निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी और संगीत में उनका योगदान -

आविद हुसैन, उस्ताद हुबीबुदीन खाँ और अल्ला रक्खा।

क्रियात्मक (Practical)

(१) रूद्र, शिखर, बसंत , सवारी (१६ मात्रा) तथा फरोदस्त ताल के ठेके विभिन्न लयकारियों में बजानें का अभ्यास।

(२) प्रथम से चतुर्थ वर्ष तक निर्धारित सारे तालों में परण, टुकडा, गत आदि बजानें का अभ्यास।

(३) त्रिताल, एकताल झपताल और आड़ाचारताल में कठिन कायदा पेशकार और टुकडा बजानें का अभ्यास।

(४) तबला और पखावज को स्वर में मिलानें का ज्ञान।

(५) पखावज पर धमार तथा सूलताल में टुकड़ा बजानें का अभ्यास।

(६) एकताल, झपताल और रूपक ताल में लहरा बजानें का अभ्यास।

(७) पाठयक्रम में निर्धारित सारे तालों के ठेके हाथ पर ताली खाली दिखलाकर विभिन्न लयकारियों में बोलनें का अभ्यास।

(८) कण्ठ संगीत और यन्त्र संगीत के साथ संगत करनें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत विशारद पूर्ण

Sangeet Visharad Final (Fifth Year)

तबला/पखावज (TABLA/PAKHAWAZ)

पूर्णांक: ३०० शास्त्र- १००प्रथम प्रश्न-पत्र-५०,
(द्वितीय प्रश्न-पत्र-५० क्रियात्मक-१२५)
मंच-प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First Paper)-

(१) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का अध्ययन-
लोम, विलोम, आड, वियाड, दुपल्ली, त्रिपल्ली, अनाघात, सम, विषम, फरमाईशी परण, द्रुत अनुद्रुत और आतायी।

(२) उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का पूर्ण अध्ययन एवं उनकी तुलनात्मक आलोचना।

(३) तबला और पखावज का पूरा इतिहास।

(४) तबला और पखावज की वादन शैली में अन्तर।

(५) भारतीय घन वाद्य और उनके प्रयोग।

(६) तबले के विभिन्न घरानों का जन्म और विकास का कारण।

(७) दिल्ली, पंजाब और लखनऊ घरानों की वादनशैली की विशिष्टता

(८) पाश्चात्य ताल पद्धति का ज्ञान।

(९) पाश्चात्य संगीत में ताल का स्थान।

(१०) लय और लयकारी में अन्तर का ज्ञान।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second Paper)

(१) पाठयक्रम में निर्धारित ताल समूहों के ठेके विभिन्न लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।

(२) कठिल पेशकार, कायदा, परण, टुकडा आदि भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर पद्धति में लिखनें का अभ्यास।

(३) कर्नाटक और पश्चात्य पद्धति में निर्धारित तालों के ठेके लिखनें का अभ्यास।

(४) पाठयक्रम में निर्धारित सारी तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

(५) संगीत विषय पर निबन्ध लिखनें की क्षमता।

(६) जीवनी और कलाक्षेत्र में, योगदान-

ज्ञान प्रकाश घोष, कृष्ण महाराज तथा सामता प्रसाद।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी में बजानें का अभ्यास-

ब्रहा, कुम्भ, पश्तो, लक्ष्मी तथा शिखर।

(२) उपर्युक्त तालों में साधारण परण, टुकडा और गत बजाने का अभ्यास।

(३) रूपक, पंचम सवारी (१५ मात्रा) एवं एकताल में कठिन पेशकार, कायदा और परण बजानें का अभ्यास।

(४) पखावज वादन शैली की विशेषताओं का सम्पूर्ण ज्ञान।

(५) पखावज के परीक्षार्थियों को ध्रुपद और धमार के साथ संगत करने का अभ्यास अनिवार्य है।

(६) तबला के परीक्षार्थियों को यन्त्र संगीत, ख्याल, भजन और ठुमरी के साथ संगत का अभ्यास आवश्यक है।

(७) धमार, रूपक और आड़ा चारताल में लहरा बजानें का अभ्यास।

(८) नृत्य के साथ संगत करने का अभ्यास।

(९) नया टुकडा तैयार कर बजानें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।